भगत रविदास – सबद ३०

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥

रागु गोंड, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७५

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥
सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१॥ रहाउ ॥
मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥
जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥
सेव मुकंद करै बैरागी ॥
सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥
एकु मुकंदु करै उपकारु ॥
हमरा कहा करै संसारु ॥
मेटी जाति हूए दरबारि ॥
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥
उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥
करि किरपा लीने कीट दास ॥
कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥
जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥

सार: अपने मूल में, हम सभी अहं से मुक्ति चाहते हैं भले ही हम वह आज़ादी अलग-अलग रास्तों से खोजते हों। मुक्तिदायक चेतना का सार- मुकंद, एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में काम करता है जो डर, लालच, घमंड और परिणामों को नियंत्रित करने की इच्छा की गांठों को खोलता है। यह

वही आंतरिक शक्ति है जो हमें अज्ञान से मुक्त करती है और हमें जागरूकता के केंद्र से पुनः जोड़ती है। मुकंद का स्मरण मन में एक स्थिर आधार रचता है, जब भी मन नकारात्मकता की ओर भटकता है, यह हमें फिर से स्पष्टता की ओर ले आता है। समय के साथ, यह निरंतर अभ्यास उस मुक्ति की ओर हमारी यात्रा को गहन करता है जिसकी तलाश हम सभी करते हैं।

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥
मुक्ति देने वाली चेतना, मुकंद का स्मरण सारे संसार को करना चाहिए। यह बताता है कि ज्ञान की तलाश करना और उसे अपनाना हमें सांसारिक मोह से मुक्त कर सकता है।

बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥
इस मुक्ति देने वाली जागरूकता के बिना, शरीर का महत्व क्षीण हो जाता है। यह ज़ोर देता है कि अपने आध्यात्मिक सार से अलग शारीरिक रूप का कोई उद्देश्य और अर्थ नहीं होता।

सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥
मुक्ति देने वाली जागरूकता ही स्वतंत्र करने वाली है। यह ज्ञान के स्रोत को उस तंत्र के रूप में पहचानता है जिसके द्वारा सांसारिक बंधनों से ऊपर उठा जा सकता है।

सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥
मुक्ति देने वाली जागरूकता हमारे मार्गदर्शक पिता और पालन-पोषण करने वाली माँ के रूप में काम करती है। यह रूपक ज्ञान को उस स्रोत के रूप में दर्शाता है जो स्पष्टता को बढ़ावा देता है और हमारे आध्यात्मिक विकास का पोषण करता है। (१)

जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
मुक्ति देने वाली जागरूकता के साथ जीना और इसीके साथ मरना। यह अवस्था प्रगति को परिभाषित करती है क्योंकि विवेक जीवित रहता है जबकि अहं का क्षय होता है।

ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१॥ रहाउ ॥

जो लोग इस मुक्ति देने वाली जागरूकता के प्रति समर्पित हैं, वह हमेशा आनंद की अवस्था में रहते हैं। यह दर्शाता है कि सच्चा आनंद और स्थिरता भीतर की अपरिवर्तनीय वास्तविकता से जुड़ने से आती है। (१)(विराम)

मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥

मुक्ति देने वाली जागरूकता को खोजना और पाना ही जीवन की साँस है। इसका अर्थ है कि आध्यात्मिक जुड़ाव उतना ही ज़रूरी और गहन है जितना कि साँस लेने की शारीरिक प्रक्रिया।

जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥

मुक्ति देने वाली जागरूकता पर विचार करने से माथे पर भाग्य का निशान पड़ सकता है। इस कथन का अर्थ है कि आत्म-चिंतन के माध्यम से, हम ऐसी स्पष्टता प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे भाग्य को आकार दे सकती है।

सेव मुकंद करै बैरागी ॥

मुक्ति देने वाली जागरूकता के प्रति भक्ति साधक को अनियंत्रित इच्छाओं से अलग होने में मदद करती है। इसका अर्थ है कि त्याग केवल संसार छोड़ना नहीं बल्कि भीतर की बुराइयों का परित्याग भी है।

सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥

जागरूकता मुक्ति की ओर ले जा सकती है जिससे कमज़ोर लोग ज्ञान का खज़ाना खोज सकें। आत्म-खोज की यह यात्रा मनुष्य को अपनी शक्ति पहचानने और अपनी सीमाओं से मुक्ति पाने में सक्षम बनाती है। (२)

एकु मुकंदु करै उपकारु ॥
मुक्ति देने वाली जागरूकता, अकेली अपना समर्थन देती है। यह इंगित करता है कि जो लोग सार्वभौमिक नियमों के साथ सामंजस्य बिठाते हैं, उन्हें उसका लाभ मिलता है।

हमरा कहा करै संसारु ॥
अब दुनिया मेरा क्या बिगाड़ सकती है? यह आत्मबोध से उपजी निर्भयता को व्यक्त करता है जहाँ बाहरी निर्णय और उत्पीड़न अपनी शक्ति खो देते हैं।

मेटी जाति हूए दरबारि ॥
सामाजिक और धार्मिक पहचान मिटाने से, अस्तित्व एक शाही सभा के दरबार में बदल जाता है। यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे सामाजिक पहचान और गढ़े गए भेद समाप्त होते हैं, मनुष्य सार्वभौमिक एकता तक सुलभता से पहुँच जाता है।

तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥
तुम ही वह मुक्ति देने वाली चेतना हो जो सभी लोकों में विवेक को रोशन करती है। इसका अर्थ है कि स्वतंत्रता उस स्पष्टता से आती है जो समय से परे है जिससे हम यह पहचान पाते हैं कि सार्वभौमिक सत्य शाश्वत है। (३)

उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥
ज्ञान उत्पन्न हुआ और प्रकाश फैल गया। यह जागृति के उस आनंदमय पल का वर्णन करता है जब अज्ञानता दूर होती है।

करि किरपा लीने कीट दास ॥
मुक्ति देने वाली चेतना की कृपा से, विनम्र कीड़े जैसे कमज़ोर भी आध्यात्मिक रूप से एकीकृत हो जाते हैं। यह बताता है कि बोध के क्षेत्र में, समावेशन किसी भी पदानुक्रम की सीमाओं से परे है।

कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥

रविदास कहते हैं कि अब उनकी तृष्णा शांत हो गई है। यह इंगित करता है कि मुक्तिदायक चेतना से मिली संतुष्टि अनंत इच्छाओं को शमित कर देती है।

जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥

मुक्ति देने वाली चेतना पर विचार करें और स्वयं को उसमें समर्पित करें। यह पुष्टि उस स्रोत पर एकल ध्यान केंद्रित करती है जो स्वतंत्रता और ज्ञान का प्रकाश लाता है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास निर्भय स्वतंत्रता की धारणा को जीवन का अनिवार्य गुण मानते हैं, ऐसी आंतरिक गरिमा जिसे कोई दे या छीन नहीं सकता। यह दृष्टिकोण एक क्रांतिकारी प्रतिरोध है जब जाति और ऊँच-नीच के पदानुक्रम टूटते हैं तब जागरूकता उन लोगों के लिए एक मूल्यवान वस्तु बन जाती है जिन्हें नीचा और कमज़ोर समझा जाता है। इस बोध की अवस्था में, व्यक्ति सामाजिक निर्णयों से मुक्त हो जाता है जिससे अत्याचार का दमन अपनी पकड़ खो देता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com